विदर्भ स्वाभिमान

RNI NO. MAHHIN / 2010 /43881

संपादक : सुभाषचंद्र दुबे

प्रबंधक : सौ. विणा एस. दुबे

www.vidarbhswabhiman.com

❖ अमरावती, गुरूवार 18 से 24 जुलाई 2024 ❖वर्ष :15 ❖अंक- 04 ❖ पृष्ठ 12 ❖ मूल्य - 10/-आरएनआई नं. MAHHIN/2010/43881 पोस्टल रजि.नं ATI/RNP/268/2022-2024 ❖डाक : शुक्रवार-शनिवार

बाबूजी के आदर्श विचार

पूज्य बाबूजी का जीवन सिद्धांत

प्रभु ने जीवन के रूप में हमे ऐसा उपहार दिया है कि यह दुनिया में करोड़ों रूपए देकर भी कोई नहीं दे सकता है. लेकिन इंसान कितना अभागा है कि इतना सुंदर जीवन मिलने के बाद भी वह पूरा जीवन केवल स्वयं के लिए बिता देता है. जबकि जब जीवन का उपयोग हम अन्यों की भलाई के लिए करे तो स्वयं भी खुश रहे और अन्यों को भी खुशियों में देखे. जीवन में खुशियां बांटने से बढ़ती है, दुःख बांटने से कम होता है. अपना दुःख भी उसे ही कहो, जो उसे समझने की काबिलियत रखता है.

केदारनाथ मंदिर से सोना चोरी का आरोप षडयंत्र

मंदिर प्रबंधन समिति ने आरोपों को किया सिरे से खारिज

विदर्भ स्वाभिमान,17 जुलाई

रूद्रप्रयाग- करोड़ों भक्तों के आस्थास्थल केदारनाथ मंदिर के गर्भगृह से सोने की कथित चोरी संबंधी आरोपों पर श्री बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति प्रबंधन और ज्योतिर्मठ के शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद के समर्थक आमने-सामने आ गए हैं. मंदिर समिति के अध्यक्ष अजेंद्र अजय ने गर्भगृह से सोने की चोरी के आरोपों को बेबुनियाद और तथ्यहीन बताते हुए आरोप लगाने वालों से विवाद खड़ा करने की बजाय सक्षम स्तर पर मामले की जांच कराने का अनुरोध किया.गर्भ गृह को स्वर्ण मंडित करने का कार्य दानदाता ने स्वयं किया.

अजय ने इन आरोपों को षड्यंत्र' बताते हुए स्पष्ट किया कि दानदाता द्वारा केदारनाथ मंदिर के गर्भगृह को स्वर्णजड़ित करने की इच्छा प्रकट की गई थी और उनकी भावनाओं का सम्मान करते हुए मंदिर समिति की बोर्ड बैठक में प्रस्ताव का परीक्षण कर उन्हें ऐसा करने की अनुमति दी गई. उन्होंने कहा कि बदरीनाथ-केदारनाथ मंदिर समिति अधिनियम-1939 में निर्धारित प्रावधानों के अनुरूप ही दानदाता से दान स्वीकारा गया और इसके लिए विधिवत प्रदेश शासन से अनुमति ली गई. मंदिर समिति के अध्यक्ष ने कहा कि भारतीय पुरात्व सर्वेक्षण विभाग के विशेषज्ञों की देखरेख में गर्भगृह को स्वर्ण मंडित कराने का कार्य किया गया. अजय ने यह भी स्पष्ट किया कि गर्भ गृह को स्वर्ण मंडित करने का कार्य दानदाता ने स्वयं किया और उन्होंने ही अपने स्तर से स्वर्णकार से तांबे की प्लेटें तैयार करवाईं और फिर उन पर सोने की परतें चढ़ाई गईं. उन्होंने कहा कि दानदाता ने अपने स्वर्णकार के माध्यम से ही इन प्लेटों को मंदिर में स्थापित भी कराया.मंदिर समिति के अध्यक्ष ने कहा कि सोना खरीदने से लेकर दीवारों पर जड़ने तक का सम्पूर्ण कार्य **शेष पेज 2 पर**

भारतीय संस्कृति में गुरू का अपार महत्व है, इस पर आधारित चार विशेष पेज के साथ कुल पेज की संख्या 12 है. मां कनकेश्वरी के साक्षात्कारों पर आधारित चार पेज पाठकों को निश्चित ही पसंद आएंगे, इसी विश्वास के साथ विदर्भ स्वाभिमान परिवार की गुरू पूर्णिमा के उपलक्ष्य में सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ.

संपादकीय

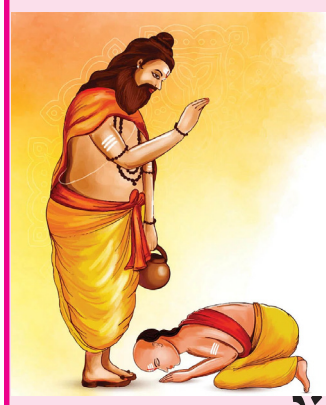

गुरु पूर्णिमा 2024

गुरूजनों का सम्मान बढ़ाता है हमारा मान

गुरू गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय
बलिहारी गुरू आपने, गोविंद दियो बताए

भारतीय संस्कृति में गुरू का महत्व भगवान से भी बड़ा बताया गया है. उक्त दोहे के माध्यम से हमारे गुरूजनों ने सदैव गुरू की महत्ता का बखान किया है. इतना ही नहीं तो अंधकार से जीवन को उजाले में ले जाने का काम भी गुरू करते हैं. इसलिए उनका सदैव पूजन और अर्चना करनी चाहिए. गुरू की महत्ता सदा सर्वदा रही है. आज भी पूज्य मां कनकेश्वरी देवी जैसे अनगिनत गुरू भारत की पवित्र भूमि में हैं, जिनका साक्षात्कारहीकिसी के जीवन को तार देता है. गुरू के प्रति समर्पित भाव होना यह पहली शर्त होती है. हमारे गुरू के प्रति बुरा सोचना तो दूर अगर कोई उनकी निंदा कर रहा है तो वहां बैठना भी नहीं चाहिए, ऐसा विधान हमारे शास्त्रों में है. गुरू में अपार विश्वास रहने वालों को ही गुरू की महिमा पता चल सकती है. गुरू को भगवान से अधिक माना गया है, इसका कारण यही है कि गुरू ही हमें भगवान से मिलाने का मार्ग बताते हैं. भगवान से मिलाने वाले जहां गुरू रहते हैं, वहीं गुरू का मतलब ही अंधकार से प्रकाश में ले जाने वाले के रूप में किया गया है. गुरू की महत्ता की गणना करते समय शब्द कम पड़ जाएंगे, धरती को कागज बनाया जाए तो वह भी कम पड़ने की बात स्वयं रिद्धी-सिद्धि और बुद्धि के दाता भगवान गणेशजी ने कही है. गुरू का प्रेम जिसे मिल जाता है, उसका जीवन पूरी तरह से तर जाता है और उसे कभी किसी बात की कमी नहीं रहती है. पौराणिक मान्यता के अनुसार गुरु पूर्णिमा को महाभारत के रचयिता वेद व्यास का जन्म दिवस माना जाता है. उनके सम्मान में इस दिन को व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है. शास्त्रों में यह भी कहा जाता है कि गुरु पूर्णिमा के दिन ही महर्षि वेदव्यास ने चारों वेद की रचना की थी और इसी कारण से उनका नाम वेद व्यास पड़ा.गुरु पूर्णिमा सनातन धर्म संस्कृति है. सनातन संस्कृति में आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहते हैं. हमारे धर्म ग्रंथों में गुरु में गु का अर्थ अन्धकार या अज्ञान और रू का अर्थ प्रकाश (अन्धकार का निरोधक). अर्थात अज्ञान को हटा कर प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले जाने वाले को गुरु कहा जाता हैं.अमरावती में भी कई ऐसे मंदिर, मठ हैं, जहां गुरू-शिष्य परम्परा चलती है. उनमें राजापेठ के काठियावाड़ी श्रीराम मंदिर का समावेश है. इसके साथ ही आदर्श गुरू जिन्हें मिलते हैं, वह परम भाग्यशाली होते हैं. ऐसे ही गुरूजनों में महामंडलेश्वर मां कनकेश्वरी देवी का भी समावेश है. उनके आशिर्वाद से कई मुसीबतें टलने और अनेकों को ऐसे अनुभव आए हैं. गुरू पूर्णिमा के पावन पर्व पर विदर्भ स्वाभिमान गुरू चरणों में नतमस्तक होकर नमन करता है. सभी को इस पावन पर्व की मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएँ.

संवेदनशील कलेक्टर साहब आप ग्रेट हो

विदर्भ स्वाभिमान
मेरी तो खरी-खरी
www.vidarbhswabhiman.com/9423426199

अमरावती जिले के जिलाधिकारी सौरभ कटियार, जिला परिषद की मुख्य कार्यकारी अधिकारी संजीता मोहपात्र द्वारा आदिवासी बहुल और सर्वाधिक निधि प्राप्त होने के बाद भी कठिनतम जीवन जीने के लिए विवश रहने वाले मेलघाट के गांवों के आदिवासी नागरिकों का दुःख दर्द समझने के लिए तथा प्रशासन को उसके द्वार तक पहुंचाने के लिए किया गया प्रयास निश्चित तौर पर सराहनीय है. 100 अधिकारियों की टीम गुरूवार को मेलघाट के लिए रवाना हुई है. इसके लिए दोनों ही अधिकारियों की विदर्भ स्वाभिमान की ओर से सराहना. कहते हैं कि अधिकार रहने के बाद भी जिस अधिकारी के काम का असर लोगों पर सीधे नहीं पड़ता है, वह अधिकारी अधिकार सम्पन्न रहने के बाद भी सदैव पर्दे के पीछे ही रहते हैं. लेकिन अमितेश कुमार, सुधीर सिंह तथा टी.एस. भाल, शैलेश नवाल जैसे कुछ अधिकारी अमरावती के इतिहास में सदैव याद किए जाते हैं. उसी तरह जिला शल्य चिकित्सक रहे डॉ. श्यामसुंदर निकम ने कोरोना महामारी के दौरान जिस तरह से अमरावती को संभाला, उन्हें भूलना संभव नहीं है. यह अधिकारी पद पर रहने के बाद भी सम्मान पाते हैं और सेवानिवृत्ति के बाद भी सम्मान पाते हैं.

इसी तरह के अधिकारियों में जिलाधिकारी सौरभ कटियार को भी

गिना जा सकता है. जनता की समस्याओं के निराकरण के साथ ही जिस तरह से प्रशासन को जनसेवा में लगाते हैं, उसकी भी जितनी सराहना की जाए कम है. बचपन से ही अपार बुद्धिमत्ता के धनी जिलाधिकारी सौरभ कटियार के मुताबिक मेलघाट में प्रशासन की मजबूत उपस्थिति के साथ ही यहां पर लोगों की समस्याओं के करीब से समझने के लिए विभिन्न विभागों के 100 अधिकारियों का दल गुरूवार को मेलघाट में एक दिन के मुकाम पर जाएगा. यह दल मेलघाट के 100 गांवों में पहुंचकर वहां के लोगों की समस्याएं समझेगा और अपनी रिपोर्ट जिलाधिकारी को देगा. इसके आधार पर वहां के लोगों की समस्या समझने और उसका निराकरण करने का प्रयास जिला प्रशासन द्वारा किया जाएगा. इस टीम में तहसीलदार से लेकर बीडीओ. जलापूर्ति विभाग, लोकनिर्माण, शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ ही अन्य अधिकारियों का समावेश है. यह सभी वहां मौके पर पहुंचकर लोगों कीसमस्याएं सुनने के साथ ही ग्राम सेवक से लेकर अन्यों की क्लास लें गे. साथ ही व्यवस्था को सुधारने के मामले में पहल की जाएगी. आमतौर पर जिला मुख्यालय से लंबी दूरी के कारण वहां के ग्राम सेवक से लेकर अन्य अधिकारी,कर्मचारी अपने मन के राजा होते हैं. कोई भी अधिकारी,कर्मचारी अपने मन का राजा होता है. लेकिन इस तरह की पहल से ग्रामीणों को जहां प्रशासन से जोड़ने का सीधा काम जिलाधिकारी ने किया है, वहीं अब मेलघाट में काम करने वाले हर अधिकारी और कर्मचारी को यह डर भी रहेगा कि कभी भी कोई भी विभाग का अधिकारी आ सकता है. स्वयं जिलाधिकारी साथ रहने से अधिकारियों का मनोबल बढ़ेगा, इसका आगामी समय में निश्चित रूप से लाभ मिलेगा. यू आर ग्रेट कलेक्टर साहब.

शुद्ध मन से आराधना का महीना है यह

विदर्भ स्वाभिमान
अधिक मास विशेष

आषाढ़ी एकादशी के बाद से आमतौर पर कुछ महीनों के लिए भगवान विष्णु आराम करते हैं. चार महीने तक उनका आराम होने के कारण इस दौरान धार्मिक कार्य सहित अन्य बंद रहते हैं. हिंदू धर्म में मलमास का विशेष महत्व बताया गया है. इस दौरान भले ही कुछ शुभ काम करने की मनाही क्यों न हो, लेकिन पूजा-पाठ के विशेष फल मिलते हैं. इस साल यह महीना सावन में लग रहा है, इस वजह से इसका महत्व कई गुना बढ़ जाता है.इसे अधिक मास या पुरुषोत्तम माह भी कहा जाता है. ज्योतिष में ऐसा माना जाता है कि जो व्यक्ति इस माह शुद्ध मन से पूजा-पाठ करता है उसकी समस्त मनोकामनाओं की पूर्ति होती है. धार्मिक मान्यताओं के अनुसार ये बहुत शुभ समय माना जाता है और इसे अध्यात्म के लिए विशेष माना जाता है. इस महीने को पुरुषोत्तम माह भी कहा जाता है. आइए ज्योतिर्विद पंडित रमेश भोजराज द्विवेदी जी से जानें इसके पीछे के कारणों के बारे में कि मलमास को पुरुषोत्तम मास क्यों कहा जाता है.मलमास, जिसे अधिक मास या पुरुषोत्तम मास के नाम से भी जाना जाता है, एक अतिरिक्त हिंदू पंचांग का एक ऐसा महीना है जिसे सूर्य और चंद्र वर्षों के बीच के अंतर को समायोजित करने के लिए हर तीन साल में पंचांग में जोड़ा जाता है.सौर वर्ष 365.2422 दिन लंबा होता है, जबकि चंद्र वर्ष 354.3670 दिन लंबा होता है. इसका मतलब है कि हर साल लगभग 11 दिनों का अंतर होता है. इस अंतर को संतुलित करने के लिए हर तीन साल में पंचांग में एक अतिरिक्त महीना जोड़ा जाता है, जिसे मलमास या पुरुषोत्तम मास कहा जाता है।यह माह भगवान विष्णु को अत्याधिक प्रिय रहने से इसे पुरूषोत्तम मास भी कहा जाता है. इस महीने किया जाने वाला नेक काम कई गुना अधिक पुण्यदायी होता है. इस माह झूठ, बुराई और किसी के दिल को चोट पहुंचाने से बचना श्रेयस्कर रहता है.

क़ेदारनाथ मंदिर का सोना

पेज 1 से जारी- दानी द्वारा कराया गया है तथा मंदिर समिति की इसमें कोई प्रत्यक्ष भूमिका नहीं थी. उन्होंने कहा कि कार्य होने के बाद दानदाता ने सभी आधिकारिक बिल एवं वाउचर मंदिर समिति को दे दिए थे, जिसके बाद नियमानुसार इसे स्टॉक बुक में दर्ज किया गया. दानस्वरूप किए गए इस कार्य हेतु दानी व्यक्ति अथवा किसी फर्म द्वारा मंदिर समिति के समक्ष किसी प्रकार की शर्त नहीं रखी गई और न ही उन्होंने मंदिर समिति से आयकर अधिनियम की धारा-80 जी का प्रमाण पत्र मांगा. अजय ने कहा कि उक्त दानदाता ने 2005 में श्री बदरीनाथ मंदिर के गर्भगृह को भी स्वर्ण जड़ित किया था लेकिन अब एक सुनियोजित षडयंत्र के तहत विद्वेषपूर्ण आरोप लगाए जा रहे हैं.

विदर्भ स्वाभिमान
आरएनआई नं. MAHHIN/2010/43881

यह समाचार पत्र मालिक, प्रकाशक,संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे द्वारा एस.बी.प्रिंटर्स द्वारा दत्त पैलेस गांधी चौक अमरावती में मुद्रित कर विदर्भ स्वाभिमान कार्यालय,छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती में प्रकाशित किया गया है.मोबाइल नंबर 9423426199/8855019189.अखबार में प्रकाशित होने वाले विभिन्न पत्र,साहित्य,लेखकों,कवियों के विचारों व तथ्यों पर आधारित होते हैं. इनसे संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है.संपादक सुभाषचंद्र जमुनाप्रसाद दुबे (संपादकीय दायित्व हेतु जिम्मेदार), मुख्य प्रबंधक- सौ.वीणा सुभाषचंद्र दुबे.Email-vidarbh.swabhiman@gmail.com,www.vidarbhswabhiman.com

जन्मदिन का मिला यादगार तोहफा

डॉ.कमलताई गवई ने कहा, सकारात्मक पत्रकारिता सराहनीय

आचार,विचार और संस्कारों के साथ ही माता-पिता की सेवा, परिवार की एकता के माध्यम से खुशियां बढ़ाने पर सदैव जोर देने वाले विदर्भ स्वाभिमान द्वारा मेरे जन्म पर विशेषांक के रूप में दिया गया तोहफा मेरे लिए सदैव यादगार रहेगा. इन शब्दों में लेडी गवर्नर तथा माय माऊली डॉ.कमलताई गवई ने अपनी भावनाएं व्यक्त की. उनके मुताबिक वे जीवनभर सदैव नेक कामों में विश्वास रखने के साथ ही अमरावती से उनका गहरा लगाव है.

यही कारण है कि इसी शहर में मिले प्रेम, अपनेपन को ध्यान में रखते हुए सदैव यहीं रहना चाही हैं और उम्र के आखिरी सांस तक यहीं रहेंगी. इस नागरी सत्कार से उन्हें अपार संजीवनी मिली और लोगों का प्रेम ही उनकी सबसे बड़ी ताकत है. देश के आदर्शवादी नेताओं में से एक स्व.दादासाहब गवई न केवल भारत बल्कि समूचे विश्व में सम्मानित नेताओं में से एक थे. आज उनका परिवार शिक्षा, समाजसेवा, न्यायदान के क्षेत्र में माता-पिता के आदर्श विचारों को बढ़ाने का काम कर रहा है. इस परिवार की गणना आदर्श, सेवाभावी तथा समाज के लिए सदैव कुछ करने की सोच रखने वाले तथा उसे अमल में लाने वाले परिवार के रूप में होती है. वर्तमान में जहां राजनीति में नैतिकता का पतन हो रहा है, इस दौर में भी इस परिवार ने अपने सिद्धांतों, अपने आदर्श विचारों के साथ कभी भी समझौता नहीं किया है. डॉ. कमलताई गवई में आत्मीयता तथा ममत्व का सागर समाया है. यही कारण है कि न केवल शहरवासी बल्कि कार्यकर्ता भी उन्हें आत्मीयता का सागर और मातृतुल्य मानते हैं.

विदर्भ स्वाभिमान आचार विचार संस्कार तथा मानवता की सेवा को सबसे बड़ा धर्म मानता है. अमरावती की लेडी गवर्नर डॉक्टर कमल ताई गवई के जन्मदिन के उपलक्ष्य में समाचार पत्र द्वारा प्रकाशित गौरव विशेषांक का विमोचन संत ज्ञानेश्वर संस्कृतिक भवन में सांसद बलवंत वानखड़े, पूर्व मंत्री एडवोकेट यशोमती ठाकुर, विधायक सुलभा खोडके के हाथों किया गया. संपादन इस विशेष अंक का भले ही मैंने किया है लेकिन इसकी प्रेरणा देने का कार्य भारतीय जैन संगठन के ट्रस्टी और मेरे मार्गदर्शक सुदर्शन गांगजी ने किया. पत्रकारिता के 35 सालों में अभी तक विदर्भ स्वाभिमान ने राष्ट्रहित तथा समाज हित के साथ मानवता के हित को सदैव महत्व दिया है. मेरी बेटियों श्वेता, वंशिका के साथ भतीजी प्राची का महत्वपूर्ण योगदान रहा.

विमोचन कार्यक्रम में पत्रकारिता में मेरे वरिष्ठ आदर्श पत्रकार अविनाश दुधे एवं नागरिक सत्कार समिति के प्राध्यापक राव सर का महत्वपूर्ण योगदान में कभी नहीं भूल सकता. आदर्श सजा के लिए संजय भोपाले के प्रयासों के बगैर यह अंक इस तरह शानदार नहीं बनता.आप सभी का दिल से आभार जताता हूं. आप सभी का सदैव आभारी रहूंगा. ताई को जन्मदिन की करोड़ों मंगलमय हार्दिक शुभकामनाएं.

सुभाष दुबे संपादक विदर्भ स्वाभिमान

शुभेच्छुक-
अभिषेक पंजापी, रवि पंजापी तथा परिवार

शुभेच्छुक-
सौ.सुनंदाताई खरड,पूर्व नगर सेविका,अमरावती

हजारों को दिया निःशुल्क फार्म

अमरावती- मध्य प्रदेश की तर्ज पर महाराष्ट्र सरकार द्वारा शुरू की गई मुख्यमंत्री लाडली बहन योजना क़ो लेकर महिलाओं की मदद और मार्गदर्शन करने वाले युवा समाजसेवी अब्दुल सलीम शेख की सराहना की जा रही है. अब्दुल सलीम शेख ने अभी तक हजारों गरीब, जरूरतमंद महिलाओं को निःशुल्क फार्म देने के साथ ही फार्म भरकर सबमिट करने में भी मदद की है.

बचपन से ही सेवाभावी अब्दुल सलीम शेख के मुताबिक मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे द्वारा शुरू की गई यह योजना लाखों महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण बदलाव लाएगी. इसके लिए जितनी सराहना की जाए, कम है.शहर ही नहीं तो उसके इस सेवाभाव की चर्चा समूचे जिले में है.

भक्ति सागर सबसे जागृत मंदिर है खल्लार का बालाजी मंदिर

अमरावती से कुछ किलोमीटर की दूरी पर स्थित खल्लार गांव में बालाजी का मंदिर जागृत मंदिर के रूप में सुख्यात है. इस मंदिरि में अपार श्रद्धा के साथ ही भक्तिभाव वाला नजारा रहता है. इस मंदिर में वर्षों से जुड़े भक्त कहते हैं कि सच्चे दिल से इस मंदिर मैं की गई मन्नता पूरी होती है. कहते हैं कि भक्ति की शक्ति अपार होती है. अगर हमारा भाव शुद्ध है तो ही इसका अनुभव लिया जा सकता है. श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से असंभव भी हो सकता है. ऐसे में यह मंदिर पौराणिक महत्व रखता है. दत्त जयंती पर यहां से बालाजी की मूर्ति गणोजा देवी ले जाई जाती है.

असंभव भी संभव हो जाता है. इसका अनुभव अमरावती शहर के साथ ही विदर्भ के सैकड़ों भक्तों को बडनेरा से कुछ किलोमीटर की दूरी पर खल्लार स्थित प्राचीन और पौराणिक बालाजी मंदिर से आता है. मंदिर में स्थापित भगवान बालाजी स्वयंभू हैं. बताते हैं कि कुएं में मिली इस मूर्ति का दर्शन कर भक्त जहां तृप्त होते हैं, वहीं अमरावती के भक्तों द्वारा हर शुक्रवार को यहां पर अभिषेक सबह 7 से 10 बजे तक किया जाता है. इस धार्मिक अनुष्ठान में अमरावती के बड़ी संख्या में भक्त शामिल होते हैं.खल्लार बालाजी मंदिर की भगवान बालाजी की मूर्ति को जागृत मूर्ति के रूप में माना जाता है. मंदिर से जुड़े महेश डोबा और कई साल से हर शुक्रवार को यहां आने वाले और भगवान बालाजी का अभिषेक करते हुए आत्मिक आनंद की अनुभूति करने वाले रामार्पण परिवार के अतुल महाराज बताते हैं कि मंदिर में कुछ पल बैठने पर ही अपार सुकून की अनुभूति होती है. यही कारण है कि पिछले कई साल से वे तथा भक्त परिवार मंदिर से जुड़ा है. मंदिर की मूर्ति का दर्शन करने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं. ऐसे भी सैकड़ों भक्त हैं, जिनके भाव का साक्षात्कार यहां हुआ है. इस मंदिर में न केवल अमरावती, बल्कि देशभर से गोविंदा के भक्त आते हैं. बड़ी संख्या में भक्त तिरूपति में जाकर दर्शन करने के बाद मावंद इस मंदिर में करते हैं. भक्त अतुल महाराज के मताबिक एक बार दर्शन के लिए जो यहां आता है, वह बार-बार यहां आता है. भक्त महेश डोबा बताते हैं कि यहां आने वाले भक्तों की सभी चाहतें पूरी होने के बाद वे जिंदगी भर के लिए यहां से जुड़ जाता है. सभी के जीवन में खुशियां आती हैं. ऐसे में उस भक्त का विश्वास बढ़ता जाता है. बताते हैं कि इस मंदिर में स्वयं बालाजी कुछ दिनों तक ठहरने के कारण यह मंदिर क्षेत्र पुनीत हो गया है. मंदिर की खूबी यह है कि सूर्य की पहली किरण चरणों पर पड़ती है. इसका अनुभव गांव ही नहीं बल्कि यहां धर्म कार्य करने के लिए आने वाले हजारों भक्तों द्वारा लिया जाता है. भगवान वेंकटेश्वर बालाजी के चरणों में सदैव सेवारत रहने वाले भक्त महेश डोबा बताते हैं कि भगवान बालाजी की मूर्ति की महत्ता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि खल्लार में स्थत बालाजी की मूर्ति के चरणों पर सूर्य की पहली किरण गिरती है. अमरावती से हर शुक्रवार को यहां भक्तों की टीम जाती है और शुक्रवार को भगवान बालाजी का अभिषेक करती है. सबह 7 से 10 बजे का यह नजारा विलक्षण रहता है.एक बार यहां अवश्य दर्शन करते हुए जीवन को धन्य करना चाहिए

विदर्भ स्वाभिमान

कमाने का सुनहरा अवसर,विज्ञापन सहयोगी चाहिए

विदर्भ में तेजी से लोकप्रिय, आचार-विचार और संस्कारों को बढ़ावा देने वाले विदर्भ स्वाभिमान को विज्ञापन सहयोगी की आवश्यकता है. बाजार पर पकड़ रखने वाले और आर्थिक मजबूती के साथ ही संभाषण कला में निपुण युवक-युवतियां संपर्क करें. काम के आधार पर मानधन और उनके द्वारा किए गए व्यवसाय पर कमीशन भी दिया जाएगा. मेहनती तथा

काम के प्रति जिद्दी युवक-युवतियां ही संपर्क करें.संपर्क का समय सुबह 10-12 बजे

मोबाइल 9423426199/8855019189

वार्ड संवाददाता चाहिए

अमरावती महानगर पालिका क्षेत्र में समस्याओं का अंबार लगा हुआ है. वार्ड की समस्याओं को प्रमुखता से उठाने का फैसला विदर्भ स्वाभिमान ने लिया है. ऐसे में वार्ड स्तर पर संवाददाताओं की नियुक्ति करनी है. समस्या की समझ के साथ ही समाजसेवा में रूचि रखने वाले युवा संपर्क कर सकते हैं. अपने क्षेत्र की समस्याएं आप भी जागरूक नागरिक के रूप में देकर प्रशासन तक पहुंचा सकते हैं. अपने क्षेत्र में मार्केटिंग के साथ ही विज्ञापन व्यवसाय के माध्यम से बेहतरीन कमाई भी कर सकते हैं. मेहनत करने की तैयारी वाले ही तत्काल संपर्क करें

संपर्क

छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती

मो. 9423426199/8855019189

विदर्भ स्वाभिमान

सदस्य बनें

विदर्भ स्वाभिमान संस्कारों का प्रोत्साहित करने वाला अखबार है. बच्चों के लिए यह ज्ञान का भंडार है. इसकी सदस्यता का अभियान चल रहा है. ऐसे में सदस्य बनने के इच्छुक संपर्क करें. मार्केटिंग करने तथा पेपर बांटने के लिए लड़के चाहिए.

संपर्क

छाया कॉलोनी,अकोली रोड,अमरावती.

मो.9423426199

यारों के यार सेवाभावी व्यक्तित्व हैं बिट्टूभैया

जन्मदिन पर विशेष सेवा करने में दिलचस्पी, लेकिन बताने से रविंद्रसिंग सलूजा का रहता है परहेज

होटल व्यवसायी, मानवता की सेवा में सदैव तत्पर रहने वाले,यारों के दिलदार और चहेते रविन्द्र सिंग सलूजा उर्फ बिट्टूभैया ऐसे व्यक्ति हैं, जिनका पूरा जीवन संघर्ष,सफलता और बाद में समाज को लगातार देने से ही भरा हुआ है. आज के दौर में जहां मामूली मदद का ढिंढोरा पीटा जाता है, वहीं भैया का सालभर सेवा उपक्रम चलता है लेकिन किसी से जिक्र तक नहीं करते हैं. वे कहते हैं रब ने दिया है, इस लायक बनाया है कि अपने से कमजोर की मदद कर सकें तो करते हैं, यह किसी को बताने की कोई जरूरत वे नहीं समझते हैं. हर क्षेत्र में उनकी मजबूत पैठ रहने,सभी दलों के नेताओं के साथ व्यक्तिगत करीबी संबंध के बाद भी कभी किसी तरह का गर्व नहीं करते हैं. सेवाभाव उनमें कूट-कूटकर भरा है. दोनों बेटे भी पिता के आदर्श विचारों पर चलते हुए नम्रता की मूरत कहा जाए तो गलत नहीं होगा. का उल्लेख किया जा सकता है. सेवाभाव कूट-कूटकर भरा हुआ है.

हर साल अपने जन्मदिन पर रक्तदान शिविर लेकर गरीब मरीजों की जरूरतों का जहां ख्याल रखते हैं, वहीं दिव्यांग, समाज के जरूरतमंदों की मदद के लिए सदैव तत्पर रहते हैं. मदद करने वाले को पहली शर्त यही रखते हैं कि यह बात केवल उन दोनों तक ही रहेगी. इस साल भी भाई साहब के 21 जुलाई को जन्मदिन पर रक्तदान शिविर रखा गया है. इसके माध्यम से भी समाज सेवा तथा गरीब

और जरूरतमंदों को रक्त उपलब्ध कराना ही विचार रहता है. विदर्भ स्वाभिमान परिवार की उन्हें जन्मदिन पर हार्दिक शुभकामनाएं. वे इसी तरह स्वस्थ रहें, मस्त रहें, प्रभु चरणों में यही कामना.हरफनमौला एवं सामाजिक कामों में अग्रणी व्यवसायी के रूप में होटल ईगल के संचालक रविन्द्रसिंग उर्फ बिट्टूभैया सलूजा बचपन से ही संवेदनशील रहने के साथ ही यारों पर मर मिटने वाले व्यक्ति हैं.व्यवसाय में सफलता और मानवता का धर्म दोनों ही साथ लेकर चलते हैं. सैकड़ों लोगों को रोजगार के माध्यम से जहां मदद करते हैं, वहीं कोई गरीब, मरीज उन्हें दर्द बताए तो यथासंभव मदद से नहीं चूकते हैं. उनकी सादगी, उनका अपनापन किसी को भी प्रसन्न कर देता है. वे कहते हैं कि आप किसी को सम्मान देंगे तो निश्चित ही आपको भी सम्मान मिलेगा. व्यवसायी के रूप में रविन्द्रसिंग उर्फ बिट्टूभैया सलूजा जितने सफल हैं, उतने ही सफल वे रिश्तों को निभाने के मामले में भी रहते हैं.यही कारण है कि न केवल अमरावती बल्कि देशभर में लाखों की संख्या में उनका मित्र परिवार है.सामाजिक कामों में जहां अग्रणी रहते हैं, वहीं दूसरी ओर सदैव नेक कामों में योगदान देने से पीछे नहीं हटते हैं.हर व्यक्ति को अपनी ओर से जितना संभव हो, मानवता की सेवा करनी चाहिए. सेवा केवल पैसे से ही नहीं होती है बल्कि किसी जरूरतमंद को रक्तदान कर भी हम सेवा कर सकते हैं. यही कारण है कि हर साल अपने जन्मदिन पर रक्तदान शिविर लेते हैं. रक्तदान शिविर में अधिकाधिक लोगों से शामिल होकर सामाजिक योगदान देने का आग्रह उन्होंने विदर्भ स्वाभिमान के माध्यम से किया है. हमारी शुभकामनाएं.

ज़ीवन में कभी ऐसा नहीं सोचना चाहिए कि हमने कुछ किया है. हमसे परमात्मा करवा लेते हैं. जब तक हममे गर्व नहीं रहता है तब तक परमात्मा हमारा साथ देते हैं लेकिन जिस दिन हमे यह लगता है कि हमने किया है, उसी दिन से हमारी प्रगति कम होने लगती है. हम केवल माध्यम से बाकी तो कर्ता-करविता प्रभु रहते हैं. इसलिए हम खुश रहें तो प्रभु की कृपा और अगर किसी कारणवश दुःखी रहें तो इसे हमें प्रभु की मर्जीसमझना चाहिए.

Happy Birthday!

हम सभी के चहेते, व्यवसायी,समाजसेवी

रविन्द्र सिंग सलूजा

उर्फ बिट्टूभैया

को जन्मदिन की

मंगलमय हार्दिक

शुभकामनाएं.

अधिकाधिक संख्या में रक्तदान करते हुए

सामाजिक कर्तव्य का निर्वहन करें.

शुभेच्छुक

बिट्टूभैया सलूजा मित्र परिवार, विदर्भ स्वाभिमान परिवार, अमरावती.

EMPANELMENT NOTICE NO.01/2024-26

INVITING RATES OF FOLLOWING ITEMS

The Quotations are invited by Executive Engineer, P.W. (Electrical) Division, Amravati for Estimation Purpose from Consultants Empanelled under Category Electrical Engineering Consultants in Regional Electrical Circle, PWD Nagpur for the following Work (S). Sealed Envelope shall be submitted to the Office of the Executive Engineer, PW. (Electrical) Division, Amravati within 8 Days from the Date of Publication of this Notice.

Sr.No.	Name of Work	Amount Put to Tender Rs.	Type & Cost of Tender from	Remark
1	2	3	4	5
1	Estimate No. 29/EE/AMT/2024-25, Appointing MEP Design Consultant for MEP Designing, Estimation and Works Progress Monitoring for Proposed Construction of Govt. Girls Hostel at NAVSARI & AMRAVATI.	361,650.00	590.00	
2	Estimate No. 148/EE/AMT/2024-25, Appointing MEP Design Consultant for MEP Designing, Estimation and Works Progress Monitoring for Proposed Construction of Ashram School at 316.368.00 CHIKHALI & Girls Hostel at BIJUDHAWADI, Dist. Amravati.	315,368.00	590.00	
3	Estimate No. 149/EE/AMT/2024-25, Appointing MEP Design Consultant for MEP Designing, Estimation and Works Progress Monitoring for Proposed Construction of Govt. Boys Hostel at MANIKPUR & MORSHI, Dist. Amravati.	280,436.00	236.00	
4	Estimate No. 149/EE/AMT/2024-25, Appointing MEP Design Consultant for MEP Designing. Estimation and Works Progress Monitoring for, Proposed Construction of Govt. Girls Hostel at DOMA, Dist. Amravati.	179,340.00	236.00	

Note:- Quoted Rates shall be without GST.
Date of Submission:-15.07.2024 to22.07.2024

Lr. No./Ex.En./(Ele.)/Amt./T.C./ 1916/2024
Office of the Executive Engineer (Electrical) Division
Amravati P.W. (Electrical) Division,
P.W.D. Compound, Camp, Amravati.
Email: elamaravati.ee@mahapwd.gov.in
Date: 08/07/2024.

(R.C. PATIL)
Executive Engineer
P.W. (Electrical) Division
Amravati

Copy to:
1 The Chief Engineer (Electrical), P.W. Department, Mumbai for Information.
2 The Superentending Engineer, Nagpur P.W. (Electrical) Circle, P.W. Department, Nagpur / Mumbai for Information.
3 Deputy Engineer, P.W. (Electrical) Sub Division, Amravati / Akola / Yavatmal / Buldhana for Information.
4 Tender Notice Board / Office File.

(वि.मा.का./अप्र./जाहि/181-2024-2025)

ख़ुद का प्रकाश खुद बनना चाहिए

नागरी सत्कार में डॉ.कमलताई गवई ने कहा, उमड़ा शहरवासियों का अपार प्रेम,विदर्भ स्वाभिमान को भी सराहा

विदर्भ स्वाभिमान,17 जुलाई

अमरावती- जीवन में स्वयं को प्रकाशित करने के लिए खुद का प्रकाश खुद ही बनना चाहिए. जब आत्मविश्वास होता है तो हर बात मुमकिन हो जाती है. लेकिन जब हमारा विश्वास डगमगाता है तो निश्चित तौर पर हम जीवन में कामयाबी की उंचाई नहीं छू सकते हैं. तथागत गौतम बुध्द ने अपने शिष्य को अंतिम समय में एक सीख दी थी. जीवन संघर्ष का नाम है, हताशा का बिल्कुल नहीं है. जब भगवान गौतम बुद्ध का शिष्य हताश हो रहा था उस समय उन्होंने उसे खुद का प्रकाश खुद बनने की सलाह दी. इन्हीं विचारों पर चलते हुये डॉ.बाबासाहब आंबेडकर ने अपना जीवन समर्पित किया और दादासाहब गवई ने भी इसी से प्रेरणा लेकर जीवनयापन किया. मैं उनकी अर्धांगिनी थी. इस कारण मैंने भी इन विचारों को अपनाकर संघर्ष के जीवन को सफलता की जननी बनाने की कोशिश की. इस आशय का प्रतिपादन माय माऊली के रूप में सुख्यात और लेडी गवर्नर डॉ.कमलताई गवई ने व्यक्त किए. अपने जीवन पर विदर्भ स्वाभिमान द्वारा प्रकाशित गौरव विशेषांक की सराहना करते हुए इसे अपने जीवन की अनमोल उपहार बताया. उनका नागरी सत्कार अभूतपूर्व रहा, जिसमें शहर के दोनों , सांसद, पूर्व मंत्री डॉ.सुनील देशमुख,प्रा.बी.टी. देशमुख के साथ ही अन्य उपस्थति थे. स्थानीय संत ज्ञानेश्वर सांस्कृतिक भवन में शनिवार को आयोजित कमलताई गवई के 82वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में सहस्त्रचंद्रदर्शन नागरी सत्कार समारोह में वह बोल रही थी.

कार्यक्रम में पूर्व विधायक बी.टी. देशमुख की अध्यक्षता में कृति समिति के सदस्य पूर्व मंत्री डॉ.सुनील देशमुख,

अमरावती के सांस्कृतिक भवन में विदर्भ स्वाभिमान द्वारा प्रकाशित डॉ.कमलताई गवई गौरव विशेषांक का विमोचन करते मान्यवर.

गिरीश गांधी, सांसद बलवंत वानखडे, डॉ.अनिल बोंडे, विधायक यशोमति ठाकुर, सुलभा खोडके, बच्चू कडू, अविनाश दूधे, पीआरएस राव, प्रा.कमलाकर पायस आदि प्रमुखता से उपस्थित थे. शानदार समारोह में डॉ.गवई को जन्मदिन की शुभकामनाएं देने के लिए हजारों कीसंख्या में उमड़ पड़े थे.

कमलताई गवई ने कहा कि मेरे तीनों बच्चे संस्कारक्षम है. इस कार्यक्रम में मुझे हर्षित किया है. दादासाहब के अर्धांगिनी के रूप में मैंने केवल कर्तव्य निभाया है. जो भारतीय संस्कृति में अपेक्षित होता है. उन्होंने हमेशा ही उपेक्षित और दलित वर्ग के लिये कार्य किया. जब मैं स्कूल में थी तब से ही मुझे दादासाहब से मिलने की चाह रही. रिपब्लिकन पार्टी के माध्यम से उनका कार्य मुझे परिचित था. एक समय उनके गले में सत्कार रूपी माला पहनाने की इच्छा रखनेवाली मैं 1969 में शादी की वरमाला पहनाई. कार्यक्रम के संदर्भ में बोलते हुये उन्होंने कहा कि गिरीश गांधी मेरे छोटे देवर है. उन्होंने यह कार्यक्रम आयोजित कर मुझे नवसंजीवनी दी है. दादासाहब गवई की प्रेरणा से मैंने शिक्षा और रोजगार के अवसर खोजे और आज मूर्तिजापुर के सदाम इंगले की बेटी कमल अमरावती की बहू नहीं, बल्कि बेटी बन चुकी है. इतना प्यार मुझे मिला. जीवन में कई लक्ष्य है जिसे पूरा करना है. दीक्षा भूमि का काम पूर्ण हुआ. लेकिन वर्तमान में हमने पर्यावरण संवर्धन के लिये पौधारोपन का कार्य हाथों में लिया है. आगामी 25 दिसंबर को दादासाहब गवई का स्मृति दिवस है. तब तक ज्यादा से ज्यादा संख्या में पौधे लगाने का लक्ष्य पूरा करना है. जिसकी शुरुआत भूषण गवई ने उनके पहले स्मृति दिवस पर 2 हजार नीम के पौधे लगाकर की थी. अंत में उन्होंने कहा कि मेरे जीवन में स्ट्रगल हमेशा ही रहा है और आज भी बरकरार है और कल भी रहेगा, लेकिन मैं हार नहीं मानूंगी.

अध्यक्ष बी.टी. देशमुख ने अपने संबोधन का उल्लेख करते हुये दादासाहब गवई और विधिमंडल, उनका राजनीतिक सफर, इस बीच कमलताई गवई के साथ उनका विवाह ऐसे कई प्रसंग उन्होंने बताये, लेकिनष एक राजनीतिक किस्सा बताते हुये उन्होंने कहा कि महायुति का क्या महत्व होता है. यह बात कमलताई गवई ने समझायी थी. जिसके कारण 1996 में पहलीबार महायुति हुयी जो सफल रही. ऐसे कई किस्से है जिसमें कमलताई गवई का राजनीतिक सहभाग सकारात्मक परिणाम लाया है. इसके अलावा उनका विपश्यना करना यह भी उनकी सेहत के लिये फायदेमंद साबित हुआ है. इसमें कोई दो राह नहीं है. इन शब्दों के साथ उन्होंने नागरी कृति समिति द्वारा आयोजित कार्यक्रम की सराहना कर कमलताई गवई को शुभकामनाएं दी.

कार्यक्रम का संचालन बाल कुलकर्णी व आभार अविनाश दुधे ने माना. प्रा.कमलाकर पायस ने सत्कारमूर्ति का परिचय दिया. गिरीश गांधी ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी. कार्यक्रम की शुरुआत में स्व.दादासाहब गवई, भारतरत्न डॉ.बाबासाहब आंबेडकर, तथागत गौतम बुध्द की प्रतिमाओं का पूजन किया गया. कार्यक्रम में संजय घरडे द्वारा लिखित सम्मान पत्र का पठन राव साहब ने किया. सहस्त्रचंद्रदर्शन कार्यक्रम में कमलताई गवई का नागरी कृति समिति द्वारा शाल, श्रीफल, स्मृतिचिन्ह, सम्मानपत्र व भव्य फूलमाला पहनाकर सत्कार किया गया. जब यह सत्कार चल रहा था, तब कीर्ति अर्जुन के साथ कमलताई को मां समान माननेवाले उनके परिवार के कई सदस्यों ने खडे होकर उनका अभिनंदन किया. कार्यक्रम में पद्मश्री डॉ.चंद्रशेखर मेश्राम, सूचना आयुक्त राहुल पांडे, डॉ.मनु परवार, वैभव दलाल, डॉ.नवल पाटिल, बबलू शेखावत, विलास इंगोले के साथ शहर के गणमान्य उपस्थित थे.

महिलाओं को नमन और सम्मान
विदर्भ स्वाभिमान
नारी तू ही नारायणी
सदस्यता पंजीयन शुरू
विदर्भ स्वाभिमान नारी युवा मंच की सदस्यता पंजीयन का अभियान आरंभ हो गया है. आप भी फार्म भरकर सदस्य बनकर अपनी खुशियों को बढ़ाने का काम कर सकती हैं. सदस्य बनने के लिए कार्यालय में संपर्क करें.
मो. 8855019189
9518528233

गुरूवार 3 से 9 जुलाई 2024

इस सप्ताह आप किसी शादी पार्टी में सम्मिलित होने बाहर जा सकते है, वाहन आदि के चलाने में सावधानी बरतें. वाद-विवाद की स्थिति से खुद को दूर रखें. अपने परिचित व्यक्ति से आज आपको अपमान का सामना करना पड़ सकता है, पार्टनर का साथ मिलेगा.

वृषभ- इस सप्ताह आप नया वाहन आदि खरीद सकते है, परिवार में नया मेहमान आ सकता है. आपको कोई नए कार्य का बड़ा ऑफर आज मिल सकता है, किसी पुराने मित्र से मिलना होगा. स्वास्थ्य का ध्यान रखें, परिवार में मांगलिक कार्य के योग बनेंगे.

मिथुन- आज का दिन आपका शानदार रहेगा, मन स्थिर और प्रसन्न रहेगा. वाणी के प्रभाव से आज आपके रुके हुए काम पूरे होंगे. किसी विशेष व्यक्ति से मिलना होगा. आज कोई नया व्यापार आप शुरू कर सकते है, पार्टनर के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

कर्क- आज का दिन आपका सोच विचार कर काम करने का है. आप कोई बड़ा डिसीजन व्यापार-व्यवसाय में न लें, नई साझेदारी में सावधानी बरतें. स्वास्थ्य का ध्यान रखें, पार्टनर के स्वास्थ्य की चिंता बनी रहेगी. आप आज वाहन आदि के चलाने में सावधानी बरतें.

सिंह-आज आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है, अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें. व्यापार-व्यवसाय में अपने सहयोगी पार्टनर्स से सावधान रहें, नहीं तो आपका काम बिगड़ सकता है. कोई नया लेन-देन आज न करें, वाहन चलाते समय सावधानी बरतें.

कन्या-आज आपका मन अशांत रहेगा, व्यापार-व्यवसाय में नुकसान उठाना पड़ सकता है. कोई बड़ा काम आपके हाथ से निकल सकता है. आज आप पारिवारिक मतभेद में उलझ सकते हैं. आप कोई बड़ा जोखिम आज व्यापार मे न उठाएं. पार्टनर के स्वास्थ्य के कारण चिंतित रह सकते हैं.

तुला-आज का दिन आपका बहुत अच्छा रहने वाला है, आज आप कोई नया बिजनेस शुरू कर सकते हैं. आपनों का साथ मिलेगा, परिवार में मांगलिक कार्यक्रम होंगे. कोई नया वाहन मकान खरीद सकते हैं,किसी धार्मिक यात्रा पर जा सकते हैं.

वृश्चिक-आज आप किसी अपने के स्वास्थ्य को लेकर परेशान रहेंगे, माता-पिता का स्वास्थ्य अचानक बिगड़ सकता है. व्यापार-व्यवसाय में अपने पार्टनर का आज आपको सहयोग मिलेगा. कोई बड़ा काम आज आप शुरू कर सकते हैं काम में रूकावट जरूर आएगी. वाणी पर संयम रखें.

धन-आज के दिन आप वाहन आदि के चलाने में सावधानी बरतें. किसी काम का बहुत दिनों से सोच रहे हैं आज वह काम पूरा होगा. न्यायालय पक्ष के काम में आपको नुकसान उठाना पड़ सकता है. वाणी पर संयम रखें, वाद विवाद की स्थिति में अपना बचाव करें.

मकर- सप्ताह में आपको कोई सुखद समाचार मिलेगा, परिवार में मांगलिक कार्यक्रम का योग बनेगा. आप कोई नया निवेश व्यापार-व्यवसाय में कर सकते हैं. पार्टनर का स्वास्थ्य खराब हो सकता है, पारिवारिक माहौल अच्छा रहेगा.

कुंभ-आज का दिन आपके लिए अच्छा रहने वाला है. आप कोई नया व्यवसाय शुरू कर सकते हैं या व्यापार में कोई बड़ा परिवर्तन कर सकते हैं. कार्यक्षेत्र में पार्टनर का अच्छा सहयोग मिलने से कार्यक्षेत्र में लाभ होगा. परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा.

मीन- इस सप्ताह स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देना होगा. आपका स्वास्थ्य बिगड़ सकता है. आप परिवार के किसी सदस्य के कारण परेशानी में पड़ सकते हैं. संतान की चिंता बनी रहेगी, व्यापार-व्यवसाय में सहयोगी से मतभेद बढ़ सकते है, आज आप किसी नए काम के लिए विचार कर सकते हैं. पारिवारिक विवाद से दूर रहें.

आपका सप्ताह शुभ हो, विदर्भ स्वाभिमान यही कामना करता है.

विकास, मानव सेवा, भक्ति भाव के त्रिवेणी संगम है विधायक रवि राणा

आषाढ़ी एकादशी पर भक्तों को साबूदाना खिचड़ी का वितरण

अमरावती-बडनेरा विधानसभा क्षेत्र के लोकप्रिय विधायक रवि राणा महाराष्ट्र के पहले ऐसे विधायक हैं जिनका राजनीतिक परिवार से नाता नहीं रहने के बावजूद उन्होंने अपनी मानव सेवा विकास को लेकर उम्दा सोच और भक्ति सेवा के त्रिवेणी माध्यम से राजनीतिक क्षेत्र में अपना स्वयं का स्थान बनाया है. बडनेरा में जहां उन्होंने पिछले तीन कार्यकाल के दौरान करोड़ों रुपए के विकास कार्य करते हुए हर गांव को पक्की सड़कों से जोड़ने का कार्य किया वहीं दूसरी ओर अभी तक हजारों धार्मिक स्थलों को सभागार के माध्यम से विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है वहीं केवल सरकारी निधि नहीं बल्कि अपनी स्वयं की मेहनत की 25 फ़ीसदी कमाई जनता की सेवा पर खर्च करने वाले महाराष्ट्र के एकमात्र विधायक है.बचपन में स्वयं अत्यधिक गरीबी का अनुभव रहने के कारण विधायक रवि राणा में गरीबों को लेकर सदैव अत्यधिक प्रेम रहा है. राजनीतिक जीवन में उन्होंने कभी जाति, धर्म,पंथ को महत्व नहीं देते हुए सदैव मानव सेवा, सभी का साथ, बडनेरा क्षेत्र के सर्वांगीण विकास के साथ ही जिले के विकास के लिए अमरावती की आवाज को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह सहित दर्जनों नेताओं से मुलाकात करते हुए विकास के लिए करोड़ों रुपए की निधि खींच लाई.

सेवाभावना के साथ ही विधायक रवि राणा तथा राणा परिवार भक्तिभाव से ओतप्रोत है. उनका मानना है कि धर्म कभी लड़ाता नहीं है, बल्कि सभी में मेल कराता है. जीवन में श्रद्धा से विश्वास और विश्वास से ही असंभव भी संभव हो जाता है. आषाढी एकादशी पर हर साल युवा स्वाभिमान परिवार द्वारा नया अमरावती स्टेशन पर पंढरपुर स्पेशल से जाने वाले वारकरियों को साबूदाना खिचड़ी तथा फलाहार का वितरण किया जाता है. इसमें स्वयं विधायक रवि राणा सहभागी होते हैं. इस साल भी उन्होंने गाड़ी को हरी झंडी दिखाने के साथ ही भक्तों की स्वयं सेवा का पुण्यलाभ प्राप्त किया. वे कहते हैं कि जितना संभव हो सके, मानव सेवा और धर्म सेवा करते रहना चाहिए.

विदर्भ स्वाभिमान

विज्ञापन सहयोगी चाहिए

विदर्भ में तेजी से लोकप्रिय, आचार-विचार और संस्कारों को बढ़ावा देने वाले विदर्भ स्वाभिमान को विज्ञापन सहयोगी की आवश्यकता है. बाजार पर पकड़ रखने वाले और आर्थिक मजबूती के साथ ही संभाषण कला में निपुण युवक-युवतियां संपर्क करें. काम के आधार पर मानधन और उनके द्वारा किए गए व्यवसाय पर कमीशन भी दिया जाएगा. मेहनती तथा काम के प्रति जिद्दी युवक-युवतियां ही संपर्क करें.

संपर्क का समय सुबह 10-12 बजे

मोबाइल 9423426199

उनके हर फैसले रहते हैं राष्ट्रधर्म से ओतप्रोत

बचपन से ही राष्ट्रीयता की भावना, समाज के लिए सदैव अच्छा करने का रहा है जज्बा, बेबाक नेता

पिछले अंक से जारी- मुख्यमंत्री आदित्य योगी आदित्यनाथ की तुलना महाराष्ट्र में बेबाकी के लिए सुख्यात रहे शिवसेना प्रमुख बालासाहब ठाकरे से की जा सकती है. देश के सबसे बड़े प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में उनके द्वारा लिए जाने वाले फैसले चौकाने वाले होते हैं. उन्हें स्पष्ट वक्ता के रूप में माना जाता हैं. वे कहते हैं कि राष्ट्र से बड़ा कोई नहीं हो सकता है. राष्ट्र सुरक्षित है तो ही धर्म और हम सभी सुरक्षित हैं. ऐसे में पहला स्थान राष्ट्र का होना चाहिए. इस मामले में उनके पास समझौते की कभी कोई गुंजाईश नहीं रहती है. कई ऐसे भी मौके लोगों ने देखे जब भाजपा के नेता रहने के बाद भी भाजपा के किसी अपराधी किस्म के व्यक्ति पर कार्रवाई करने में उन्होंने संकोच नहीं किया. उनका कहना है कि वे बातों में नहीं बल्कि भारतीय संविधान में भरोसा रखते हैं, ऐसे में उनके लिए कानून के आगे सभी समान हैं. जो उत्तर प्रदेश गुंडागीरी के लिए पहचाना जाता था, महिलाओं के साथ छेड़खानी, बलात्कार की घटनाएं होती थी, उस उत्तर प्रदेश में कानून का राज स्थापित करने का श्रेय भी उन्हें ही जाता हैं. आज मुख्यमंत्री रहने के बाद भी उनकी सादगी और राष्ट्र के प्रति समर्पण का इससे बड़ा सबूत और क्या होगा कि आज जब नगर सेवक पांच साल में करोड़ों कमा लेता है और परिवार के साथ ही नाते-रिश्तेदारों को भी तार देता है, लेकिन उनका परिवार आज भी अभावों में जीता है. वे स्वयं कहते हैं कि संत आदमी हैं. राष्ट्र की सेवा का मौका उन्हें प्रभु के आशिर्वाद और जनता के प्यार से मिला है, ऐसे में जनता से बढ़कर उनके लिए कोई नहीं है. उन पर मुस्लिमों का विरोधी होने का आरोप लगता है लेकिन कई मर्तबा अपने साक्षात्कार में स्पष्ट कर चुके हैं, उनका गणित केवल राष्ट्रद्रोहियों से नहीं पटता है. लेकिन जो मुस्लिम भाई राष्ट्र प्रेमी हैं, उनके साथ उनका गणित बहुत अच्छा पटता है. उनके मुताबिक यह देश सभी का है और सभी को यह भाव रखना चाहिए कि राष्ट्र से बड़ा कोई नहीं हो सकता है. हर नागरिक की चिंता सरकार करती है.भारत माता को पवित्र भूमि मानने वाले योगी आदित्यनाथ कहते हैं कि यह ऐसा मुल्क है, जहां डाल-डाल पर चिड़िया बैठती है, हर धर्म का सम्मान किया जाता है. लेकिन वह धर्म नहीं हो सकता है, जो अन्यों को तकलीफ दे, अन्यों के धर्म को कम कर आंके. उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में उन्हों ने जिस तरह से जनहित में निर्णय लिए, भ्रष्टाचार को रोकने का प्रयास किया, उसने यह साबित किया कि करने का जज्बा हो तो व्यक्ति कुछ भी कर सकता है.

19 मार्च 2017 से उत्तर प्रदेश के 21वें और वर्तमान मुख्यमंत्री के रूप में कार्यरत हैं. लगातार प्रदेश प्रगति की राह पर तेजी से बढ़ रहा है. हमारी उन्हें हार्दिक शुभकामनाएं.

गुणवत्ता विश्वसनीयता तत्पर सेवा

शालेय, महाविद्यालयीन पाठ्य पुस्तक, सामान्य ज्ञान स्पर्धा की विभिन्न किताबे, रजिस्टर, नोटबुक्स, कम्पास सहित सभी प्रकार की फाइलें,बुक्स, स्टेशनरी का एकमात्र विश्वसनीय स्थान. रियायती कीमत तथा तत्पर सेवा ही हमारी विशेषता है.

--संपर्क--

प्रथमेश बुक व जनरल स्टोअर्स, रविनगर चौक, अमरावती.

सन 1967 पासून

अमरावती शहरात वाजवी दरात सर्वात जास्त प्लाटस्चे सौदे करणारे एकमेव इस्टेट एजंट

संजय एजंसीज्

टाऊन हॉल समोर, नेहरू मैदान,अमरावती.

फोन 2564125,2674048

राजपुरोहित डिजिटल स्टुडियो

शादी-ब्याह का रंग, हमारे संग

आधुनिकतम साज-सज्जा के साथ ही रियायती कीमत में बेहतरीन गुणवत्ता क़ी विडियो शूटिंग के लिए शहर ही नहीं तो समूचे विदर्भ में एकमात्र विश्वसनीय केन्द्र.फोटोग्राफी, विडियो शूटिंग के साथ अलबम के काम किए जाते हैं.

राजपुरोहित फोटो स्टुडियो

कृष्णार्पण कॉलोनी, संत लहानुजी महाराज मंदिर के पास,अमरावती.अमरावती.

मो.9028123251

पक्षियों को जल पिलाने से होंगे मालामाल

घर की छत पर पक्षियों के लिए दाना-पानी की सुविधा करें. भीषण गर्मी में उन्हें हमारी सर्वाधिक जरूरत है. सृष्टि हित में विदर्भ स्वाभिमान की विनम्र प्रार्थना है. इस माध्यम से पुण्य कमाने का सुअवसर मिल रहा है.

विदर्भ स्वाभिमान

मानव सेवा,माता-पिता सेवा को प्रोत्साहित करने वाला समाचार पत्र

महामंडलेश्वर कनकेश्वरी देवी

साध्वी कनकेश्वरी देवी जी अग्नि अखाड़े की पहली महामंडलेश्वर थीं. उनका बचपन से ही भक्ति में रुझान था और भगवान शिव उनके आराध्य थे. नौ साल की उम्र में ही भगवान शिव के दर्शन के लिए उन्होंने साधना शुरू कर दी थी. इस दौरान मोरबी में अग्नि अखाड़े के श्री महंत स्वामी केशवानंद से उनकी मुलाकात हुई. कनकेश्वरी देवी कहती हैं कि उनसे मिलकर उन्हें लगा कि जिस भगवान के दर्शन की आस थी, वो पूरी हो गई है. गुरु के त्याग और वैराग्य के दर्शन से उनकी चेतना जागी और उनका जीवन वैराग्य की ओर चल पड़ा. उन्होंने रामायण और भागवत का अध्ययन किया और १६ साल की उम्र में पहली कथा की.

उज्जैन में सिंहस्थ में अग्नि अखाड़े की साध्वी कनकेश्वरी देवी को बड़े-बड़े संतों की मौजूदगी में हुए भव्य पट्टाभिषेक समारोह में महामंडलेश्वर की पदवी दी गई। अपनी सौम्यता से एक अलग पहचान बनाने वाली कनकेश्वरी देवी ने सिर्फ नौ साल की उम्र में ही सांसारिक जीवन छोड़कर दीक्षा ले ली थी। वे अग्नि अखाड़े की पहली महिला महामंडलेश्वर हैं। भगवान शिव के दर्शन के लिए बनीं थीं साध्वी...

कनकेश्वरी देवी का जन्म गुजरात के मोरबी जिले का है। वो बचपन से ही विशेष प्रतिभा संपन्न थीं। एकबार पढ़ने या सुनने के बाद कोई भी श्लोक, मंत्र या कहानी वैसे के वैसे दोहरा देती थीं। बचपन से उनका रुझान भक्ति की तरफ था। भगवान शिव उनके आराध्य हैं। शिव के दर्शन के लिए नौ साल की उम्र में साधना शुरू कर दी थी।

इसी दौरान मोरबी में अग्नि अखाड़े के श्री महंत स्वामी केशवानंद से उनकी मुलाकात हुई। कनकेश्वरी देवी कहती हैं उनसे मिलकर मुझे ऐसा लगा कि मुझे जिस भगवान के दर्शन की आस थी वो पूरी हो गई है। गुरु में मुझे शिव सा सौम्य रूप दिखा। उनका त्याग, वैराग्य के दर्शन से चेतना जागी और मेरा जीवन वैराग्य की ओर चल पड़ा। रामायण व भागवत का अध्ययन किया। १६ साल की उम्र में पहली कथा की।

गुरु का प्रसाद है महामंडलेश्वर का पद

कनकेश्वरी देवी ने कहा कि महामंडलेश्वर का पद मेरी योग्यता का नहीं बल्कि गुरु की कृपा का प्रसाद है। गुरु स्वामी केशवानंदजी के साथ शुरू से रही हूं। उनकी कृपा और आशीर्वाद से अखाड़ों के संतों ने महामंडलेश्वर के लिए चुना है। उन्होंने कहा महामंडलेश्वर बनने के बाद नाम जरूर बदल जाएगा लेकिन और कुछ नहीं बदलेगा। पिछले १५ साल से वैरागी जीवन बिता रही हूं। साधना के अलावा शास्त्रों के मुताबिक अनुशासित जीवन जी रही हूं।

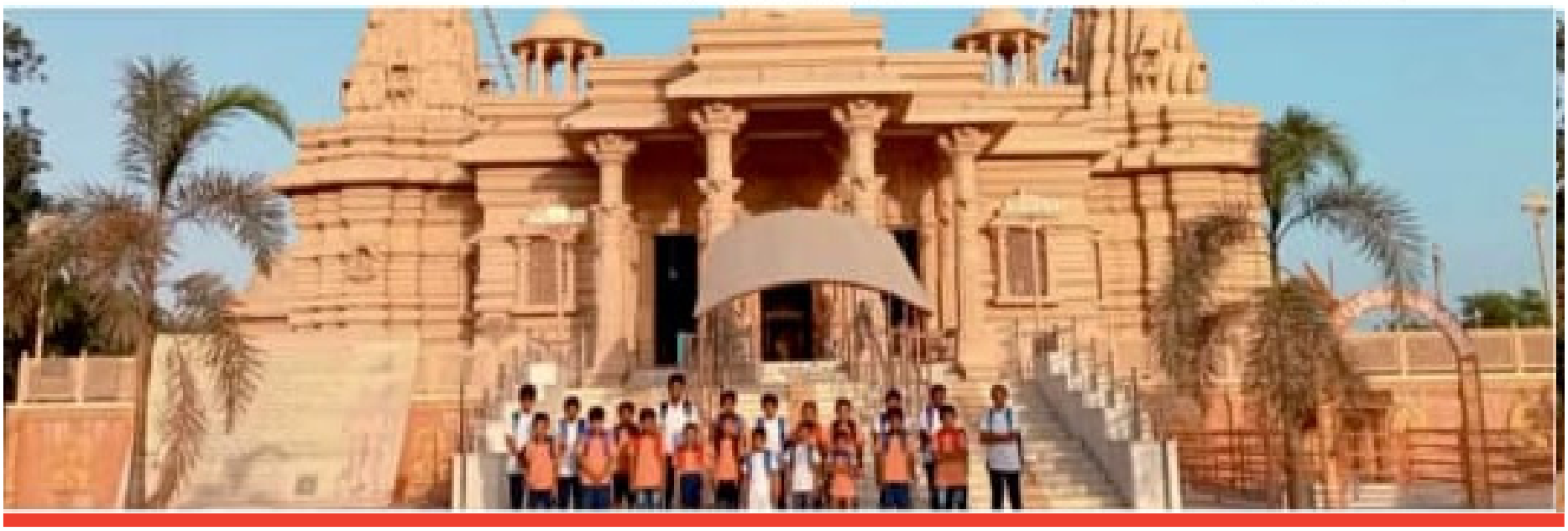

साक्षात्कारी हैं महामंडलेश्वर मां कनकेश्वरी देवी

सुदर्शन गांग का विशेष साक्षात्कार, मां की हो चुकी हैं 550 श्रीरामायण कथाएं, गौमाता की सेवा पर देती हैं जोर

श्वेता दुबे, 17 जुलाई

अमरावती - कहते हैं कि भक्ति की शक्ति अपार होती है.गुरू का स्थान भगवान से भी बड़ा होता है. हम भाग्यशाली हैं कि हमें महामंडलेश्वर मां कनकेश्वरीदेवी जैसी आदर्श गुरू मिली हैं, जिन्होंने पूरा जीवन तपस्या, गुरू की सेवा में लगा दिया है. धर्म के साथ ही कर्म के माध्यम से भी मां ने सदैव आदर्श स्थापित किया है. गौमाता की सेवा के लिए समर्पित रहने के साथ ही जीवन में सदैव अपने भक्तों के कल्याण को ही वरीयता देती हैं. मां के सानिध्य में वर्ष 1999 से आने का योग आया, इसके बाद निरंतर उनका आशिर्वाद बढ़ता रहा और जीवन में कई बातें इस तरह होती गई कि उन पर लगातार भरोसा बढ़ता गया. पिछले कई वर्षों से मां के सानिध्य का प्रत्यक्ष अनुभव

करने वाले सुदर्शन गांग बताते हैं कि उनके पास रहने पर अद्भुत सकारात्मक उर्जा की जहां अनुभूति होती है, वहीं दूसरी ओर मां पर गुरू के साथ ही प्रभु की अपार कृपा का अनुभव भक्तों को लगता है. मां के आश्रमों में भी अनुशासन के साथ ही वेदपाठी छात्रों के कल्याण के लिए मां स्वयं सदैव ध्यान देती हैं. गौशालाओं के माध्यम से गौमाता पर विशेष ध्यान देने के साथ ही उनकी गुरू भक्ति पर कथाओं में अत्याधिक जोर रहता है. उन्होंने उम्र के 8 साल में ही दीक्षा ली. गुरूदेव केशव बापू की कृपापात्र रहने के कारण

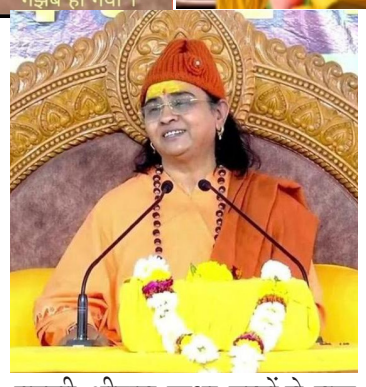

पहली श्रीराम कथा उन्हों ने गुरू के आदेश पर किया. यहां जिस तरह से उनकी कथा हुई, वह गुरू की कृपा और चमत्कार से कम नहीं है. मां की कथाएं सुनने के लिए हजारों की संख्या में भक्त उमड़ते हैं. वे कहती हैं कि धर्म की रक्षा हर हाल में होनी चाहिए, ऐसा होने से ही निश्चित ही हमारा देश आगे बढ़ेगा. वे कहती हैं कि धर्म और अनुशासन जीवन में सदैव संवारने का काम करता है. धार्मिक व्यक्ति गलत राह पर नहीं जा सकता है.

गुरू की महिमा

गुरू की कृपा बड़े भाग्य की बात होती है. यह सभी के नसीब में नहीं होती है. लेकिन जिसे सच्चा गुरू मिल जाता है, जीवन में उसकी तमाम परेशानियां, मुसीबतें खत्म होकर जीवन सफल हो जाता है. हम सभी भाग्यशाली हैं, जिन्हें मां कनकेश्वरीदेवी जैसी गुरू मिली हैं, जो तपस्या करते तपकर सोना हुई हैं और लाखों की आधार हैं.

धौरहरा का बाबा कुबेरनाथ धाम है हजारों ग्रामवासियों का आस्थास्थल

सुनील दुबे, 17 जुलाई

धौरहरा - कहते हैं कि भक्ति की शक्ति अपार होती है. अगर प्रभु में विश्वास है, श्रद्धा है तो निश्चित ही जीवन सुचारू तरीके से चलता है. इसी तरह प्रतापगढ़ जिले की पट्टी तहसील के अंतर्गत अमरगढ़ के करीब दलापांडे का धौरहरा में सुख्यात संत शिवशंकर महाराज द्वारा निर्मित और उनकी आराधना से तपोस्थल बने बाबा कुबेरनाथ का मंदिर न केवल गांव के लिए बल्कि आसपास के कई गांवों के भोलेनाथ भक्तों का आश्रय स्थल बना हुआ है. गांव में बड़ी संख्या में लोग मंदिर में दर्शन के लिए आते हैं. जागृत मंदिर के रूप में यह जहां सुख्यात है, वहीं दूसरी ओर मंदिर की ख्याति दूर-दूर तक फैली है. मंदिर के भक्तों को रास्ते की बद्हाली के कारण होने वाली परेशानी को ध्यान में रखते हुए ग्राम पंचायत के सरपंच ने अथक प्रयास करते हुए मंदिर के पास

का रास्ता बनवाने का पवित्र कार्य किया है, इससे मंदिर में आने वाले भक्तों को काफी सुविधा होगी. रास्ते का यह कार्य कई वर्षों से प्रलंबित पड़ा था. सरपंच विभा मिश्रा के इस कार्य की भक्तों तथा गांववासियों द्वारा सराहना की जा रही है.इसमें उनके पति इंद्रभूषण मिश्रा तथा सदस्यों का भी सहयोग है.

बचपन में इस मंदिर में जाने का कई बार मौका मिलता था. मंदिर में अपार सुकून और संतोष की अनुभूति भोलेनाथ की कृपा से होती है. मंदिर का साक्षात्कार कई भक्तों को होने की बात बुजुर्ग बताते हैं. इस मंदिर में स्थापित शिवलिंग क़ा दर्शन कर कोई भी धन्य हो सकता है. धौरहरा के साथ ही आसपास के गांवों के भक्त भी मंदिर में पहुंचकर बाबा कुबेरनाथ महादेव का दर्शन कर जीवन सफल करते हैं. मंदिर में पुजारी उजागिर यादव भोलेनाथ की सेवा में रत हैं. भक्तों को कई बार बेहतरीन अनुभव यहां पर दर्शन का आया है, इससे भक्त बढ़ रहे हैं.

गुरू गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय
बलिहारी गुरू आपने, गोविंद दियो बताए

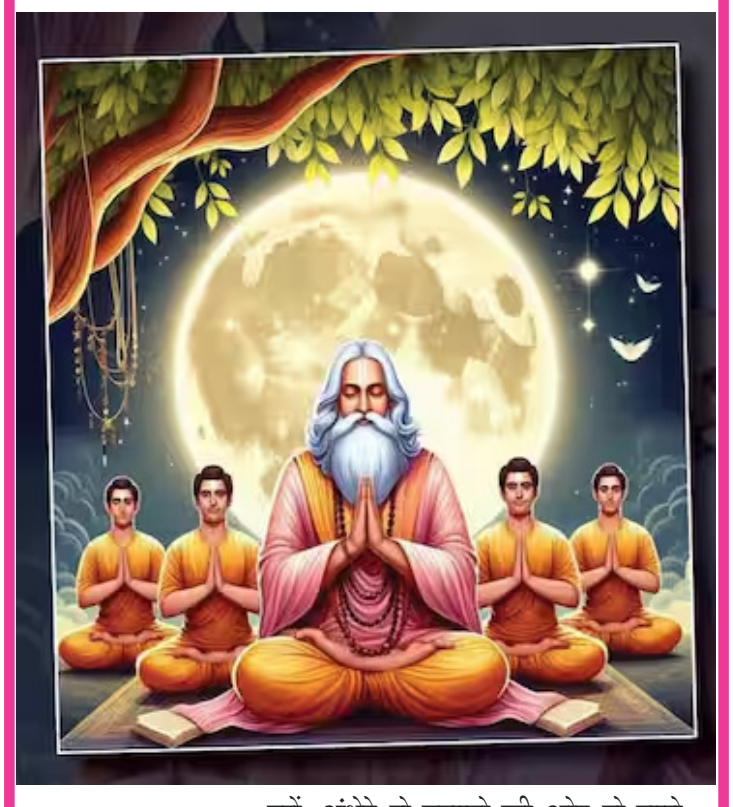

हमें अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने वाले जीवन को तारने वाले समस्त गुरूजनों के चरणों में नमन, गुरू पूर्णिमा पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं.

शुभेच्छुक

सुदर्शन गांग,अरूण कडू,प्रदीप जैन तथा आनंद परिवार, बडनेरा.

ज़ीवन को तारने और संवारने वाले हैं गुरूदेव

हर व्यक्ति की जीवन में गुरू का अत्याधिक महत्व रहता है. जिन्हें सही गुरू मिलते हैं, उनका जीवन तर जाता है. यही कारण है कि गुरू को लेकर अपार सम्मान होना चाहिए. गुरू की महत्ता भगवान से भी अधिक कही गई है तो इसीलिए. भगवान भोलेनाथ का एक प्रसंग है, जब गुरू का अपमान शिष्य द्वारा करने पर भगवान शिव का क्रोध उस शिष्य पर बरपा और गुरू ने भगवान शिव से उसे माफ करने के लिए स्तुती की. उस समय भोलेनाथ ने कहा कि गुरू का अपमान करने वाले को दिया गया शाप तो रद्द नहीं हो सकता है लेकिन गुरू द्वारा आग्रह करने पर इसका प्रभाव कम किया जा सकता है. कुल मिलाकर जीवन में गुरू की महत्ता का वर्णन हमारे शास्त्रों में भी किया गया है.

भारत के मध्यप्रदेश राज्य के होशंगाबाद जिले की तहसील सिवनी मालवा में सदी के सबसे महान दार्शनिक अध्यात्म के स्वामी ज्ञान के सागर आचार्य रजनीश का पुनर्जन्म कोरी बुनकर समाज में हुआ है, जिनका नाम पूरा नाम (हरीश कोरी) प्रोफेसर हनीश ओशो है जिनको अनेकों नाम से जाना जाता है. हरीश, हर्ष, काशी के पंडा, पंडित जी देवानंद, आदि नामों से जाना जाता है.

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहते हैं. इस दिन गुरु पूजा का विधान है. गुरु पूर्णिमा वर्षा ऋतु के आरम्भ में आती है. इस दिन से चार महीने तक परिव्राजक साधु-सन्त एक ही स्थान पर रहकर ज्ञान की गंगा बहाते हैं.ये चार महीने मौसम की दृष्टि से भी सर्वश्रेष्ठ होते हैं. न अधिक गर्मी और न अधिक सर्दी.इसलिए अध्ययन के लिए उपयुक्त माने गए हैं. जैसे सूर्य के ताप से तप्त भूमि को वर्षा से शीतलता एवं फसल पैदा करने की शक्ति मिलती है, वैसे ही गुरु-चरणों में उपस्थित साधकों को ज्ञान, शान्ति, भक्ति और योग शक्ति प्राप्त करने की शक्ति मिलती है.

हिंदू सनातन शास्त्र के अनुसार, इस तिथि पर परमेश्वर शिव ने दक्षिणामूर्ति का रूप धारण किया और ब्रह्मा के चार मानसपुत्रों को वेदों का अंतिम ज्ञान प्रदान किया. इसके अलावा,यह दिन महाभारत के रचयिता कृष्ण द्वैपायन व्यास का जन्मदिन भी है. वे संस्कृत के प्रकांड विद्वान थे. उनका एक नाम वेद व्यास भी है. उन्हें आदिगुरु कहा जाता है और उनके सम्मान में गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा नाम से भी जाना जाता है. भक्तिकाल के संत घीसादास का भी जन्म इसी दिन हुआ था, वे कबीरदास के शिष्य

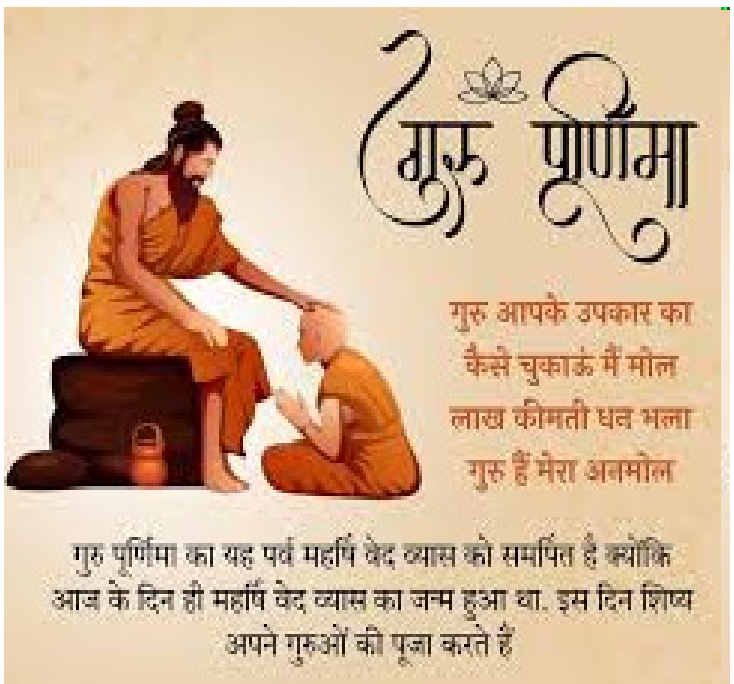

गुरूपूर्णिमा 21 जुलाई पर विशेष

थे.शास्त्रों में गु का अर्थ बताया गया है- अंधकार या मूल अज्ञान और रु का का अर्थ किया गया है. उसका निरोधक. गुरु को गुरु इसलिए कहा जाता है कि वह अज्ञान तिमिर का ज्ञानांजन-शलाका से निवारण कर देता है.अर्थात अंधकार को हटाकर प्रकाश की ओर ले जाने वाले को 'गुरु' कहा जाता है.

'अज्ञान तिमिरांधस्य ज्ञानांजन शलाकया, चकच्छूः मिलितम येन तस्मै श्री गुरुवै नमः

गुरु तथा देवता में समानता के लिए एक श्लोक में कहा गया है कि जैसी भक्ति की आवश्यकता देवता के लिए है वैसी ही गुरु के लिए भी. झ्कट बल्कि सद्गुरु की कृपा से ईश्वर का साक्षात्कार भी संभव है. गुरु की कृपा के अभाव में कुछ भी संभव नहीं है.

आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहते हैं. इस दिन गुरु पूजा का विधान है. गुरु पूर्णिमा वर्षा ऋतु के आरम्भ में आती है. इस दिन से चार महीने तक परिव्राजक साधु-सन्त एक ही स्थान पर रहकर ज्ञान की गंगा बहाते हैं. ये चार महीने मौसम की दृष्टि से भी सर्वश्रेष्ठ होते हैं. न अधिक गर्मी और न अधिक सर्दी. इसलिए अध्ययन के लिए उपयुक्त माने गए हैं.जैसे सूर्य के ताप से तप्त भूमि को वर्षा से शीतलता एवं फसल पैदा करने की शक्ति मिलती है, वैसे ही गुरूचरणों में उपस्थित साधकों को ज्ञान, शान्ति, भक्ति और योग शक्ति प्राप्त करने की शक्ति मिलती है.ज़ीवन में प्रभु से भी अधिक महत्व प्रभु ने स्वयं गुरूजनों को दिया है. ऐसे में चाहे प्रभु श्रीराम हों, चाहे प्रभु श्रीकृष्ण हों अथवा भगवान विष्णु के समस्त अवतारों ने भी धरती पर अपने मानव जीवनकाल में सदैव गुरू की महत्ता को बताया है. साथ ही गुरू का जीवन में कभी भी अपमान नहीं करने की बात कही है. गुरू पूर्णिमा पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएँ और सभी पर गुरूजी की कृपा बनी रहे, यही कामना.

गुरू ही होते हैं ज्ञान के आधार

भारतीय संस्कृति में गुरू का महत्व भगवान से भी बड़ा बताया गया है. भगवान से मिलाने वाले जहां गुरू रहते हैं, वहीं गुरू का मतलब ही अंधकार से प्रकाश में ले जाने वाले के रूप में किया गया है. गुरू की महत्ता की गणना करते समय शब्द कम पड़ जाएंगे, धरती को कागज बनाया जाए तो वह भी कम पड़ने की बात स्वयं रिद्धी-सिद्धि और बुद्धि के दाता भगवान गणेशजी ने कही है. गुरू का प्रेम जिसे मिल जाता है, उसका जीवन पूरी तरह से तर जाता है और उसे कभी किसी बात की कमी नहीं रहती है.

पौराणिक मान्यता के अनुसार गुरु पूर्णिमा को महाभारत के रचयिता वेद व्यास का जन्म दिवस माना जाता है. उनके सम्मान में इस दिन को व्यास पूर्णिमा भी कहा जाता है. शास्त्रों में यह भी कहा जाता है कि गुरु पूर्णिमा के दिन ही महर्षि वेदव्यास ने चारों वेद की रचना की थी और इसी कारण से उनका नाम वेद व्यास पड़ा.गुरु पूर्णिमा सनातन धर्म संस्कृति है. सनातन संस्कृति में आषाढ़ मास की पूर्णिमा को गुरु पूर्णिमा कहते हैं. हमारे धर्म ग्रंथों में गुरु में गु का अर्थ अन्धकार या अज्ञान और रू का अर्थ प्रकाश (अन्धकार का निरोधक). अर्थात अज्ञान को हटा कर प्रकाश (ज्ञान) की ओर ले जाने वाले को गुरु कहा जाता हैं. गुरू की कृपा से ईश्वर का साक्षात्कार होता है गुरू की कृपा के बिना कुछ भी सम्भव नहीं है.

आदिगुरु परमेश्वर शिव दक्षिणामूर्ति रूप में समस्त ऋषि मुनि को शिष्यके रूप शिवज्ञान प्रदान किया था. उनके स्मरण रखते हुए गुरुपूर्णिमा मानाया याता है.गुरु पूर्णिमा उन सभी आध्यात्मिक और अकादमिक गुरुजनों को समर्पित परम्परा है, जिन्होंने कर्म योग आधारित व्यक्तित्व विकास और प्रबुद्ध करने, बहुत कम अथवा बिना किसी मौद्रिक खर्चे के अपनी बुद्धिमता को साझा करने के लिए तैयार हों. इसको भारत, नेपाल और भूटान में हिन्दू, जैन और बोद्ध धर्म के अनुयायी उत्सव के रूप में मनाते हैं. यह पर्व हिन्दू, बौद्ध और जैन अपने आध्यात्मिक शिक्षकों / अधिनायकों के सम्मान और उन्हें अपनी कृतज्ञता दिखाने के रूप में मनाया जाता है. यह पर्व हिन्दू पंचांग के हिन्दू माह आषाढ़ की पूर्णिमा (जून-जुलाई) में मनाया जाता है. गुरू का जीवन में माता-पिता तथा प्रभु से भी अधिक महत्व इसीलिए भारतीय शास्त्रों ने दिया है. वह गुरू ही है जो हमें जीवन जीने का तरीका बताते हैं, वह गुरू ही हैं, जो हममे ज्ञान का प्रकाश जलाते हुए उसे रोशन करते हैं. जिस पर गुरू की कृपा होती है, वह सबसे बड़ा भाग्यवान होता है. स्वयं प्रभु श्रीराम ने भी गुरू की महत्ता विषद की है. श्रीराम चरितमानस में प्रभु श्रीराम के बारे में चौपाई कही गई है, जिसमें प्रात काल उठि कै रघुनाथा, मात-पिता गुरू नावहीं माथा के रूप में गुरू की महत्ता बताई गई है. गुरू पूर्णिमा ही नहीं गुरू का सदैव सम्मान किया जाना चाहिए. गुरू पूर्णिमा के उपलक्ष्य में गुरूजनों को सादर नमन. इस उपलक्ष्य में सभी को हार्दिक शुभकामनाएं.

प्राचार्य सुधीर महाजन
पोद्दार इंटरनेशनल
स्कूल,अमरावती.

गुरू गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय
बलिहारी गुरू आपने, गोविंद दियो बताए

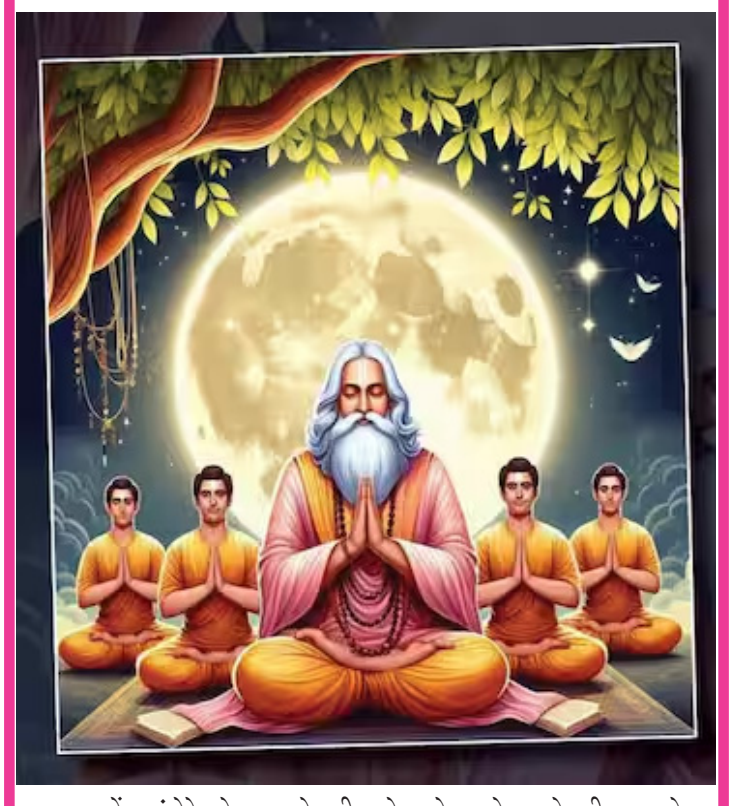

हमें अंधेरे से उजाले की ओर ले जाने वाले जीवन को तारने वाले समस्त गुरूजनों के चरणों में नमन, गुरू पूर्णिमा पर सभी देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं.

शुभेच्छुक
प्राचार्य सुधीर महाजन
पोद्दार इंटरनेशनल
स्कूल,अमरावती.

गुरु का वैराग्य उसको मिलता है जिसे गुरु वचन पर विश्वास हो।

- माँ कनकेश्वरी

राम नाम जपने से सभी प्रकार के दुख, दर्द और कठिनाइयां श्रीराम कृपा से अपने आप दूर हो जाया करती हैं। जैसे तेज हवा चलने से बादल भाग जाते हैं, वैसे ही राम नाम का जाप घबराहट को दूर कर देता है। यह बात मां कनकेश्वर देवी ने कही।

मां कनकेश्वरी देवी का कहना है कि जो जन दुख, घोर संकट आने पर भी राम नाम को जपते हैं, उनके भयंकर संकट जाप के प्रभाव से मिट जाते हैं और वो मनुष्य सुखी हो जाता है। जब इंसान पर संकट, भयंकर प्रकार के दुख तथा कष्ट क्लेश हो, तब उसे घबराना नही चाहिए। उस समय तुरंत राम नाम जपना चाहिए, क्योंकि राम नाम सबका पालक है। प्रभु श्रीराम सभी प्रकार के सुखों को देने वाले स्वामी हैं। जो भी जीव श्री राम रूपी सरोवर अर्थात सत्संगति में विचरता है, उसे श्री राम के दरबार में सम्मान प्राप्त होता है। जो गुरु उपदेश के अनुसार राम नाम जपते हैं, परमात्मा श्रीराम उन्हें गले लगा लेते हैं।

व्यक्तित्व निर्माण के लिए सतसंग जरूरी

- माँ कनकेश्वरी